egkRek xka/kh varjjk"Vªh; fganh fo'ofo|ky;] o/kkZ ¼egkjk"Vª½
¼laln }kjk ikfjr vf/kfu;e 1997] Øekad 3 ds varxZr LFkkfir dsanzh; fo'ofo|ky;½
Mahatama Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No.3 of 1997 )
नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

# हिंदी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद केंद्र में मनाया गया 18वां स्थापना दिवस

## 'कबीर का घर और देस' आज भी यूटोपिया है - प्रो. सदानन्द शाही

## कबीर की कविता जीवन के विविध संबन्धों से परिपूर्ण - प्रो आर.सी. त्रिपाठी

'कबीर का घर और देस' आज भी एक यूटोपिया है, जिसे चरितार्थ करना हम सब के लिए बड़ी चुनौती है। घर आदमी की जरूरत है, जो आदमी होने को चरितार्थ करता है। आज कबीर के साथ चलने वालों की कमी नहीं है। कबीर की कविता उन तक बखूबी पहुंचती है जो साधारण लोग हैं। 'अवधू गगन मण्डल घर कीजै' जब कबीर कहते हैं तो उसकी व्याप्ति का अंदाजा आप लगा सकते हैं। 'मन रे जागत रहिए भाई' कह कर कबीर घर की रखवाली की बात करते हैं। घर में आदमी को छोटा करने की बात वे नहीं करते। उक्त बातें बी.एच.यू. के प्रोफेसर एवं विश्वविद्यालय के कार्यपरिषद सदस्य प्रो. सदानंद शाही ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के इलाहाबाद केंद्र द्वारा मनाए गए 18वें स्थापना दिवस समारोह के मुख्य वक्ता के तौर कहीं।

**'कबीर की कविता में घर और देस'** विषय पर आयोजित व्याख्यान में बोलते हुए मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आर.सी. त्रिपाठी ने कहा कि कबीर की कविता जीवन के विविध संबंधों से परिपूर्ण और भरी-पूरी है। कबीर ऐसे घर की कल्पना करते हैं, जिसमें सौहार्द हो, प्रेम हो, कटुता के लिए यहां कोई

जगह नही है। कबीर का मनोविज्ञान आज के मनोविज्ञानियों से काफी आगे का था। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ कथाकार दूधनाथ सिंह ने कहा कि कबीर के घर के दो रूप हैं। एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। घर एक भौतिक सत्य है। कबीर में इस घर का उल्लेख कम है। दूसरे विशिष्ट अतिथि प्रो. राजेन्द्र कुमार ने कहा कि कबीर की रचनाओं का घर हमारे जीवन में भी है। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. अक़ील रिज़वी ने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय का इलाहाबाद केंद्र बहस-मुबाहिसा को सकारात्मक ढ़ंग से आगे बढ़ा रहा है। कबीर की शायरी आज के हालात में ज्यादा मौजूं है।

कार्यक्रम की शुरूआत में इलाहाबाद केंद्र के प्रभारी प्रोफेसर संतोष भदौरिया ने विश्वविद्यालय के 18 वर्षों की अकादमिक एवं रचनात्मक उपलब्धियों पर विस्तार से बात रखी और वर्तमान कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र जी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में इलाहाबाद केंद्र की रचनात्मक पहल का भी जिक्र किया। अतिथियों का स्वागत डॉ. विधु खरे दास, डॉ. अनुपमा राय, डॉ. सपना सिंह एवं सुश्री सूर्या ई.वी. ने किया। संचालन डॉ. अमरेन्द्र कुमार शर्मा ने एवं आभार डॉ. सालेहा जर्रीन ने व्यक्त किया।

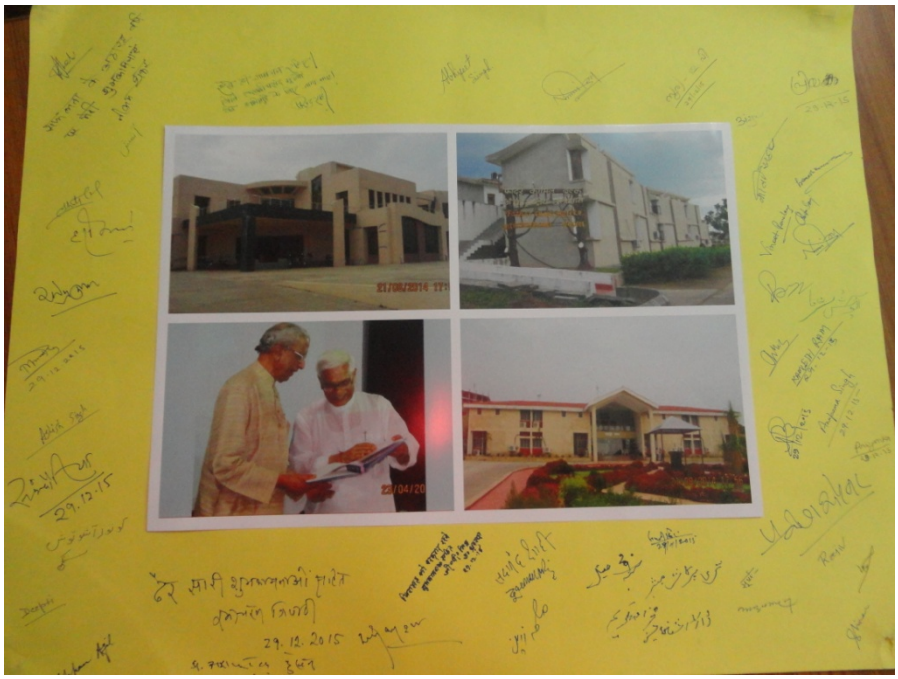

कार्यक्रम की शुरूआत में विश्वविद्यालय की उपलब्धियों पर केंद्रित प्रदर्शनी **‘शब्दों और तस्वीरों के आईने में विश्वविद्यालय’** का उद्घाटन प्रो. अक़ील रिज़वी, प्रो. आर. सी. त्रिपाठी एवं प्रो. सदानंद शाही ने पोस्टर पर हस्ताक्षर एवं शुभकामनाएं देकर किया।

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से श्रीप्रकाश मिश्र, हरीशचन्द्र पाण्डे, नीलम शंकर, अशफ़ाक हुसैन, फ़खरूल करीम, प्रवीण शेखर, सुरेन्द्र राही, जी.पी. मिश्रा, के.के. पाण्डेय, अविनाश मिश्र, रतिनाथ योगेश्वर, अंशुमान कुशवाहा, हितेश सिंह, राजन सहित इलाहाबाद केंद्र के तमाम छात्र/छात्राएं एवं कर्मचारी मौजूद रहे।

प्रस्तुति
इलाहाबाद केंद्र

## विश्वविद्यालय के 18वां स्थापना दिवस पर इलाहाबाद केंद्र में जुटे साहित्य प्रेमी, व्याख्यान में कबीर की कविताओं पर चर्चा, विभिन्न प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने की भागीदारी



विश्वविद्यालय के 18वें स्थापना दिवस के अवसर पर इलाहाबाद केंद्र में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता एवं उनकी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति के लिए केंद्र के परिसर में अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम 22 दिसंबर 15 को पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था **"पृथ्वी रहेगी तो हम भी रहेंगे"**। रंगों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता को विद्यार्थियों ने बखूबी संजोया। इस प्रतियोगिता में लगभग 25 विद्यार्थियों ने भागीदारी की। प्रतियोगिता में श्री रवीन्द्र प्रताप सिंह ने प्रथम, दीप्ति मिश्रा द्वितीय, पंकज कुमार एवं बृजेश कुमार ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया। सांत्वना प्रमाण-पत्र विनीत पाण्डेय एवं चंदन सरोज को दिया गया।

दिनांक 23 दिसंबर 2015 को **‘तात्कालिक भाषण’** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न विषयों का चुनाव कर विद्यार्थियों ने अपनी वाक् पटुता, तथ्यों के प्रस्तुतिकरण एवं आलोचनात्मक विवेक का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में श्री विकास सिंह ने प्रथम, बृजेश कुमार द्वितीय, चंदन सरोज एवं पियूष कुमार ने संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 28 दिसंबर 2015 को वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय था **‘राष्ट्र के निर्माण में हिंदी की अनिवार्य भूमिका रही है’** इसके पक्ष एवं विपक्ष में विभिन्न अनुशासनों के विद्यार्थियों ने अपनी तर्कशक्ति से प्रभावपूर्ण प्रस्तुति दी जिसमें श्री बृजेश कुमार ने प्रथम, विकास को द्वितीय तथा धीरेन्द्र प्रताप ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

दिनांक 31 दिसंबर 2015 को स्थापना दिवस के अवसर पर भीष्म साहनी की स्मृति में इलाहाबाद केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार में पूर्व एवं वर्तमान छात्र/छात्राओं द्वारा **‘स्वांग मल्टीनेशनल’** का नाट्य मंचन किया गया। इलाहाबाद केंद्र के नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन के पूर्व छात्र प्रवीण शेखर के कुशल निर्देशन में हुए इस नाटक में कथ्य और शिल्प के सुंदर रंग प्रयोग देखने को मिले। कल्पनाशील दृश्यों एवं सशक्त अभिनय से सजी नाट्य प्रस्तुति हास्य-व्यंग के माध्यम से विकसित पश्चिमी राष्ट्रों द्वारा विकासशील और अल्प विकसित देशों की संस्कृति, उद्योग, व्यापार आदि को खत्म करने की साजिश को दिखाया गया है।

विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन इलाहाबाद केंद्र के प्रभारी प्रोफेसर संतोष भदौरिया के निर्देशन में डॉ. अमरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ. विधु खरे दास, डॉ. सालेहा जर्रीन, डॉ. अनुपमा राय, डॉ. सपना सिंह, सुश्री सुर्या ई.वी. ने संयोजक, सहसंयोजक एवं निर्णायक के रूप में, सराहनीय तरीके से अपने दायित्वों को पूर्ण किया। स्थापना दिवस 29 दिसंबर 2015 के आयोजन में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को मुख्य अतिथि प्रो. आर.सी. त्रिपाठी, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय एवं प्रो. अक़ील रिज़वी, पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष उर्दू विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

प्रस्तुति
इलाहाबाद केंद्र

**bykgkckn dsUnz**
24@28&ljktuh uk;Mw ekxZ] flfoy ykbUl] bykgkckn&211001] m-iz-] Hkkjr
Qksu& 0532&2420700] QSDl % 0532&2424442] eks- 8004926360 bZesy% mgahvalld@gmail.com osclkbV % hindivishwa.org